SS – 111

III Semester B.C.A./B.Sc. (F.A.D.) Examination, November/December 2018
(F+R)(CBCS)(Semester Scheme)
(2016 – 17 & Onwards)
HINDI LANGUAGE – III
Natak, Arthagrahan aur Sankshepan

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्य में लिखिए : **(10×1=10)**

1) पाँचवा व्यक्ति किस युग का प्रतिनिधित्व करता है ?

2) सूत्रधार पात्रों के माध्यम से किसकी खोज करना चाहता है ?

3) खुद को क्रान्तिकारी मानने वालों की सन्तान उन्हें क्या समझती है ?

4) रामकली किस कर्म को बेशर्मी और बेअदबी कहती है ?

5) यह बर्बर समाज किसे दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं देता है ?

6) प्यारेलाल की बेटी का क्या नाम है ?

7) जैनेट को शुद्ध करके विमल क्या नाम देना चाहता है ?

8) नाटक का कौन-सा पात्र विवाह में विश्वास नहीं करता है ?

9) परम्परा से मुक्ति पाने के बाद ही हम किसका सही अर्थ समझ पाते हैं ?

10) 'युगे-युगे क्रान्ति'- नाटक के नाटककार कौन हैं ?

II. निम्नलिखित में जे किन्हीं **दो** अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : **(2×7=14)**

1) यह पाप है। विधवा का विवाह करना शास्त्र और धर्म के विरुद्ध है। जो ऐसा करते हैं वे दुष्ट हैं, शूद्र हैं, नीच और नराधम हैं।

2) लड़की ऐसी है जैसे साक्षात देवी का रूप। जैसा रूप वैसा ही स्वभाव। बोलती है, तो मोती झरते हैं ।

3) उतने ही विश्वास से यदि पिता से कहती तो शायद वह मान जाते।

III. 'युगे-युगे क्रांति' नाटक हर युग के क्रान्ति का प्रतिनिधित्व करती है। स्पष्ट कीजिए । (1×16=16)

अथवा

'युगे-युगे क्रांति' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (2×5=10)

1) देवीप्रसाद और सूत्रधार का संवाद।

2) सुरेखा।

3) जैनेट।

V. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (10×1=10)

पोंगल पर्व मनाने के संदर्भ में एक कथा भगवान श्री कृष्ण और इंद्र को लेकर प्रचलित है। परंपराओं के अनुसार फसल काटने के समय यह त्योहार लगातार चार दिन तक मनाया जाता है। पहला दिन भोगी पोंगल, दूसरा दिन सूर्या पोंगल, तीसरा दिन मत्तु पोंगल तथा चौता दिन कनुम पोंगल के रूप में मनाया जाता है। पोंगल 14 जनवरी से प्रारंभ होकर 17 जनवरी तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रथम दिन भोगी पोंगल देवराज इंद्र को प्रसन्न करने के लिए होता है, क्यों की इंद्र देव के प्रसन्न होने पर ही समय-समय पर वर्षा होती है और वर्षा से ही फसलों का अच्छा उत्पादन होता है तथा धरती हरी-भरी होती है। इस उत्सव को सभी नाच-गाकर मनाते हैं। दूसरे दिन सूर्या पोंगल मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग मिट्टी की हाँड़ियों में दूध-चावल मिलाकर पकाते हैं। बाद में सूर्य भगवान को इसका भोग लगाया जाता है। तीसरे दिन मत्तु पोंगल में गायों और भैंसों को खूब सजाया सँवारा जाता है। इनके प्रति सभी अपनी आस्था व्यक्त करते हैं, क्यों कि इन्हीं की मदद से कृषि कार्य सम्पन्न होता है। अंतिम दिन सभी लोग रंग-बिरंगे, नए-नए कपड़े पहनकर घूमने के लिए बाहर जाते हैं ।

1) परम्पराओं के अनुसार पोंगल कब मनाया जाता है ?

2) पोंगल कितने दिनों तक मनाया जाता है ?

3) दूसरे दिन केपोंगल को क्या कहते हैं ?

4) भोगी पोंगल में क्या होता है ?

5) किसके प्रसन्न होने के वर्षा होती है ?

6) पोंगल का पर्व किस महीने में मनाया जाता है ?

7) गायों और भैंसों को किस पोंगल में सजाया जाता है ?

8) पोंगल के अन्तिम दिन लोग क्या करते हैं ?

9) 'प्रसन्न' शब्द का विलोम लिखिए।

10) 'पर्व' शब्द का पर्यायवाची लिखिए।

VI. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए :- **(10)**

किसी नगर में एक जुलाहा रहता था। स्वभाव का वह बहुत अच्छा था। सभी से सीठा बोलता था और कभी किसी से नाराज़ नहीं होता था। लोग उसे संत कहा करते थे। एक दिन कुछ शरारती लड़के उसके यहाँ पहुँचे। वे उसकी परीक्षा लेकर देखना चाहते थे कि उसे कैसे गुस्सा नहीं आता। उनमें से एक बहुत धनी व्यक्ति का लड़का था। उसे अपने पैसे का घमंड था। उन लड़कों को देखते ही जुलाहे ने बड़े प्यार से कहा, "आओ बेटा, तुम लोगों को क्या चाहिए ?" सामने रखी साड़ियों में से एक की ओर इशारा करके एक लड़के ने कहा, "मुझे वह साड़ी चाहिए। उसका क्या लोगे ?"

जुलाहे ने कहा "दो रुपये" उस लड़के ने वह साड़ी हाथ में ले ली और उसके दो टुकड़े कर दिए। बोला, "मुझे पूरी नहीं आधी चाहिए । इसका क्या लोगे ?"

जुलाहे ने बड़ी शांति से कहा, "एक रुपया ।" नौजवान ने उस आधी साड़ी के भी दो टुकड़े कर के पूछा, "इसका क्या दाम होगा ?"

"आठ आना।" जुलाहे ने बिना किसी प्रकार की नाराज़गी के कहा।